

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कक्षा - 10

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 4

भोलाराम का जीव

[हरिशंकर परसाई (1922-1995)]

भाग – 1

पल्लवी कलिता

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

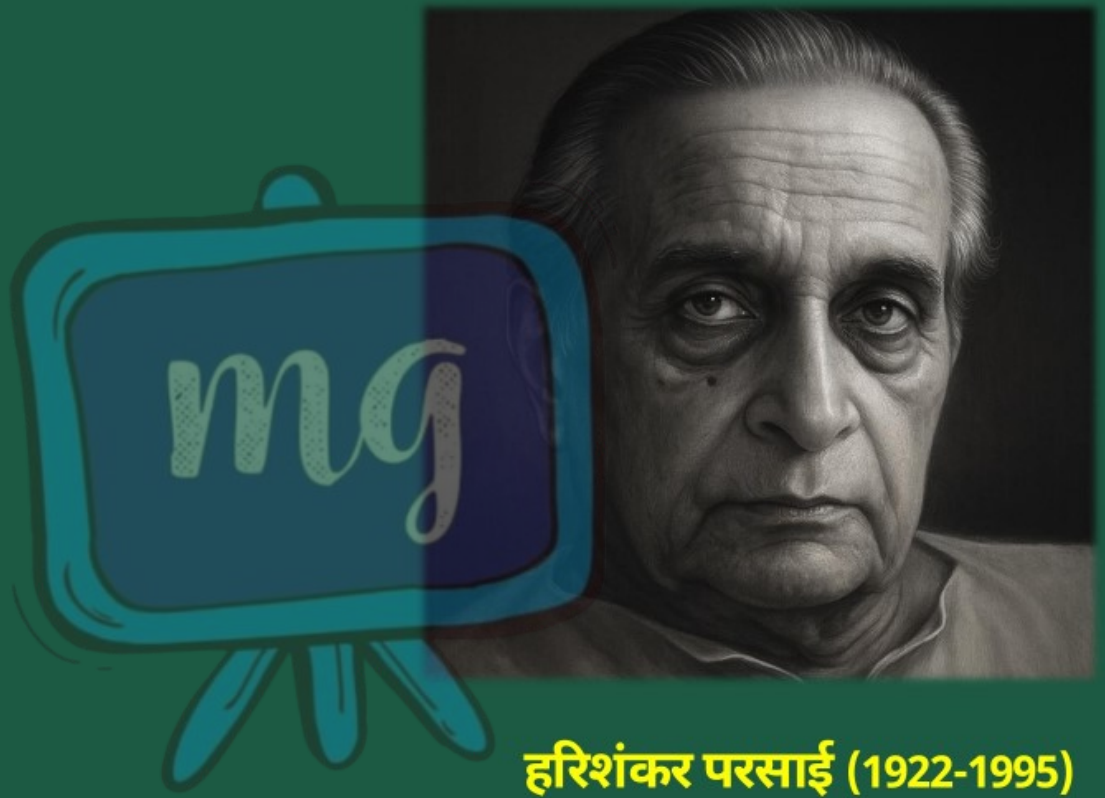

हरिशंकर परसाई (1922-1995)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई (1922-1995)

जन्म - हरिशंकर परसाई जी का जन्म सन् 1922 में मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में स्थित जमानी नामक गाँव में हुआ।

शिक्षा - आरंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई। उच्च शिक्षा के लिए वे नागपुर आए और नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए किया।

लेखन कार्य - सन् 1947 से वे स्वतंत्र लेखन कार्य से जुड़ गए। कुछ समय तक उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में भी काम किया। उन्होंने जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका भी निकाली।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

रचनाएँ – परसाई जी ने साहित्य की कई विधाओं में प्रचुर रचनाएँ की हैं, परंन्तु हिंदी साहित्य जगत में वे व्यंग्य लेखक के रूप में अधिक विख्यात हुए।

- उनकी रचनाओं में 'रानी नागफनी कि कहानी' और 'तट की खोज' (उपन्यास), 'हँसते हैं रोते हैं' और 'जैसे उनके दिन फिरे' (कहानी संग्रह), 'भूत के पाँव पीछे', 'सदाचार की ताबीज','बेईमानी की परत' 'पगडंडियों का जमाना', 'शिकायत मुझे भी है' (निबंध संग्रह), ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' और 'तिरछी रेखाएँ' (व्यंग्य संग्रह) आदि प्रमुख हैं। 'परसाई रचनावली', छह भागों में प्रकाशित हो चुकी हैं।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

रचनाओं के विषय - परसाई जी ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में समाज में फैले पाखण्ड, भ्रष्टाचार, शोषण, बेईमानी जैसी कुरीतियों का पर्दाफाश किया है।

भाषा - आम आदमी की बोलचाल की भाषा के साथ-साथ बीच-बीच में अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

मृत्यु- सन् 1995

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

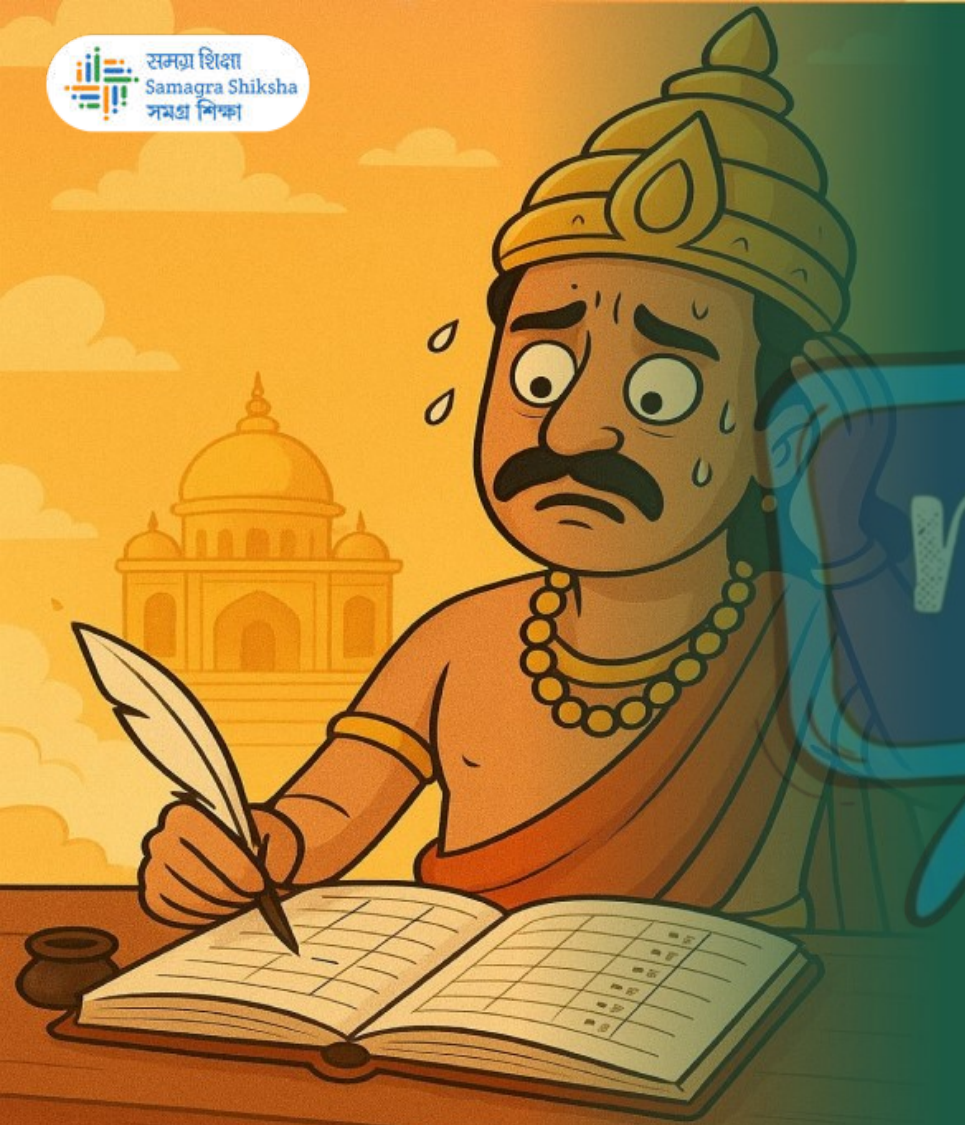

भोलाराम का जीव

ऐसा कभी नहीं हुआ था।

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नर्क में निवास-स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे- पर ऐसा कभी नहीं हुआ था। सामने बैठे चित्रगुप्त बार-बार चश्मा पोंछ, बार-बार थूक से पन्ने पलट, रजिस्टर देख रहे थे।

अलॉट : আৱণ্টন কৰা

चित्रगुप्त : যমৰ দৰৱাৰত পাপ-পুণ্যৰ হিচাপ লিখোতা

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीझकर रजिस्टर इतने जोर से बंद किया कि मक्खी चपेट में आ गयी।

उसे निकालते हुए वह बोले- 'महाराज, रिकार्ड सब ठीक है।' भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर हाँ अभी यहाँ तक नहीं पहुँचा।'

रिकार्ड	: অভিলেখ
यमदूत	: যমৰাজৰ দূত
देह	: শৰীৰ



धर्मराज ने पूछा- ' और वह दूत कहाँ है ?'

'महाराज, वह भी लापता है।'

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बहुत बदहवास-सा वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और भय के कारण और भी विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे- 'अरे, तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है ?'

बदहवास	: ভয় খাই থকা
विकृत	: বিৰূপ, অস্বাভাৱিক ৰূপ

यमदूत हाथ जोड़कर बोला- 'दयानिधान! मैं कैसे बतलाऊँ कि क्या हो गया। आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु-तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही वह मेरे चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया।

तीव्र	: তীব্রতাৰে
वायु	: বতাহ
तरंग	: লহৰ, ঢৌ

इन पाँच दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।' धर्मराज क्रोध से बोले- 'मूर्ख जीवों को लाते-लाते बूढ़ा हो गया, फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।'

दूत ने सिर झुकाकर कहा- 'महाराज, मेंरी सावधानी में बिल्कुल कसर नहीं थी। मेंरे इन अभ्यस्त हाथों से अच्छे-अच्छे वकील भी नहीं छूट सके, पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल ही हो गया।'

ब्रह्माण्ड : विश्व, जगत
कसर : त्रुटि/दोष
अभ्यस्त : दक्ष, प्रशिक्षित

चित्रगुप्त ने कहा- 'महाराज, आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत चला है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और वे रास्ते में ही रेलवे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मौजे रेलवे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे-के-डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनैतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने, मरने के बाद भी खराबी करने के लिए नहीं उड़ा दिया ?'

हौजरी : কাপোৰৰ কাৰখানা
पार्सलों : ডাক বা ৰে'লৰ দ্বাৰা বস্তু পঠিওৱা

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा- 'तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गयी। भला भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना-देना ?'

व्यंग्य	: কটাক্ষ, ঠাট্টা, খোঁচ মৰা কথা
रिटायर	: সেৱানিবৃত, অৱসৰ প্ৰাপ্ত
नगण्य	: যাক গণনাই কৰিব নোৱাৰি
दीन	: দুখীয়া

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



इसी समय कहीं से घूमते-फिरते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुमसुम बैठे देख बोले- 'क्यों धर्मराज, कैसे चिन्तित बैठे हैं ? क्या नर्क में निवास-स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई ?'

धर्मराज ने कहा- 'वह समस्या तो कभी की हल हो गयी, मुनिवर ! नर्क में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए हैं। कई ईमारतों के ठेकेदार हैं, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं।'

गुमसुम : उदास

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए हैं, जिन्होंने ठेकेदारों से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गए ही नहीं। इन्होंने बहुत जल्दी नर्क में कई इमारतें तान दी हैं। वह समस्या तो हल हो गई।

भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारे ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला।

अगर ऐसा होने लगा, तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा।'

नारद ने पूछा- 'उस पर इन्कम टैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।'

चित्रगुप्त ने कहा- 'इन्कम होता तो टैक्स होता ! ... भुखमरा था!'

नारद बोले- 'मामला बड़ा दिलचस्प है। अच्छा, मुझे उसका नाम-पता तो बतलाओ । मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।'

इन्कम टैक्स : আয়কৰ

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया- 'भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के घमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे-फूटे मकान में वह परिवार-समेत रहता था। उसकी एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की। उम्र लगभग पैंसठ साल सरकारी नौकर था; पाँच साल पहले रिटायर हो गया था। मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया था, इसलिए मकान-मालिक उसे निकालना चाहता था। इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है।



बहुत सम्भव है कि अगर मकान-मालिक, वास्तविक मकान-मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही, उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफी घूमना पड़ेगा।'

माँ-बेटी के सम्मिलित क्रंदन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गए।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगाई - 'नारायण.... नारायण!' लड़की ने देखकर कहा- 'आगे जाओ, महाराज।'

क्रंदन	: कन्दा
तलाश	: अनसन्धान



नारद ने कहा- 'मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को जरा बाहर भेजो, बेटी।' भोलाराम की पत्नी बाहर आई। नारद ने कहा- 'माता, भोलाराम को क्या बीमारी थी ?'

'क्या बताऊँ ? गरीबी की बीमारी था। पाँच साल हो गए, पेंशन पर बैठे, पर पेंशन अभी तक नहीं मिली। हर दस-पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब ही नहीं आता था और आता तो यही कि तुम्हारी पेंशन के मामले पर विचार हो रहा है।

दरख्वास्त : प्रार्थना पत्र, आवेदन

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

इन पाँच सालों से मेरे सब गहने बेचकर हमलोग खा गए। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते-घुलते और भूखे मरते-मरते उन्होंने दम तोड़ दिया।'

नारद ने कहा- 'क्या करोगी, माँ ?.. उनकी इतनी ही उम्र थी।'

ऐसा तो मत कहो, महाराज । उम्र तो बहुत थी। पचास-साठ रुपया महीना पेंशन मिलती, तो कुछ और काम नहीं करके गुजारा हो जाता। पर क्या करें ? पाँच साल नौकरी से बैठे हो गए और अभी तक एक कौड़ी नहीं मिली।'

दुख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी नहीं। वह अपने मुद्दे पर आए- 'माँ, यह तो बताओ कि यहाँ किसी से क्या उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो?'

पत्नी बोली- 'लगाव तो महाराज, बाल-बच्चों से ही होता है।'

नारद हँसकर बोले- 'हाँ, तुम्हारा यह सोचना ठीक ही है। यही भ्रम अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा माता, मैं चला।'

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

व्यंग्य समझने की असमर्थता ने नारद को सती के क्रोध की ज्वाला से बचा लिया।

स्त्री ने कहा- 'महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेंशन मिल जाए। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जाएगा।'नारद को दया आ गई थी। वह कहने लगे - 'साधुओं की बात कौन मानता है ? मेंरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं। फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाऊँगा और कोशिश करूंगा।'

सती : पतिव्रता स्त्री

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ्तर में पहुँचे। वहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के केस के बारे में बातें कीं। उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला- 'भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।'

नारद ने कहा- 'भाई, ये बहुत-से पेपरवेट तो रखे हैं इन्हें क्यों नहीं रख दिया ?'

पेपरवेट : কাগজ বা আবেদনপত্র চাই তাৰ ওপৰত ৰখা কাঁচৰ গোলাকাৰ বস্তু

- ইয়াত ঘোচৰ অর্থ প্রতীক

बाबू हँसा - 'आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं... खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।'

नारद उस बाबू के पास गए। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवें के पास। जब नारद पच्चीस-तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आए, तब एक चपरासी ने कहा- 'महाराज, आप क्यों इस झंझट में पड़ गए ! आप अगर साल-भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिए। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जाएगा।'

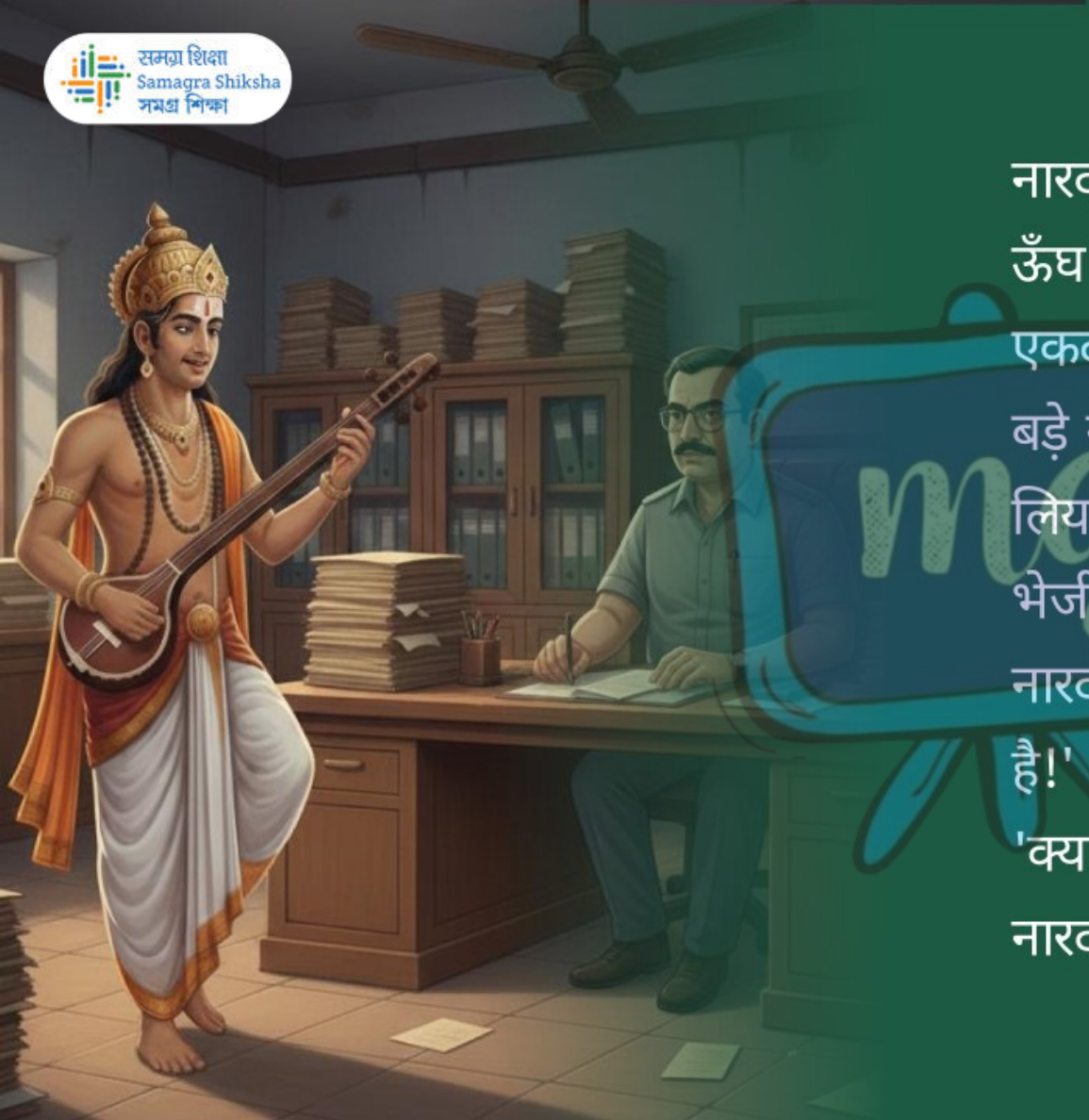

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। उन्हें एकदम बिना विजटिंग-कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए। बोले- 'इसे कोई मंदिर-वंदिर समझ लिया क्या?' धड़धड़ाते चले आए! चिट क्यों नहीं भेजी?'

नारद ने कहा- 'कैसे भेजता? चपरासी तो सो रहा है!'

'क्या काम है ?'- साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेंशन-केस बतलाया।

साहब बोले- 'आप हैं वैरागी; दफ्तरों के रीति-रिवाज नहीं जानते । असल में भोलाराम ने गलती की। भई, यह भी एक मंदिर है। यहाँ भी दान-पुण्य करना पड़ता है; भेंट चढ़ानी पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रही हैं; इन पर वजन रखिए।'

नारद ने सोचा कि फिर वजन की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले-'भई, सरकारी पैसे का मामला है। पेशन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है।

देर लग ही जाती है। हजारों बार एक ही बात को हजार जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेंशन मिलती है उतनी कीमत की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ, जल्दी भी हो सकती है, मगर...' साहब रुके।

नारद ने कहा- 'मगर क्या ?'

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा- 'मगर वजन चाहिए। आप समझे नहीं। जैसे आपकी यह सुन्दर वीणा हैं, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है।

वीणा: एक प्रकारर वाद्ययन्त्र

स्टेशनरी : लेखन सामग्री, कागज-कलम आदि

मेंरी लड़की गाना-बजाना सीखती है। यह मैं उसे दे दूँगा। साधुओं की वीणा तो बड़ी पवित्र होती है। लड़की जल्दी संगीत सीख गई, तो उसकी शादी हो जाएगी।'

नारद अपनी वीणा छिनते देखकर जरा घबराए। पर फिर सँभालकर उन्होंने वीणा टेबल पर रखकर कहा- 'यह लीजिए। अब जरा जल्दी उसकी पेंशन का ऑर्डर निकाल दीजिए।'

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घंटी बजाई। चपरासी हाजिर हुआ।

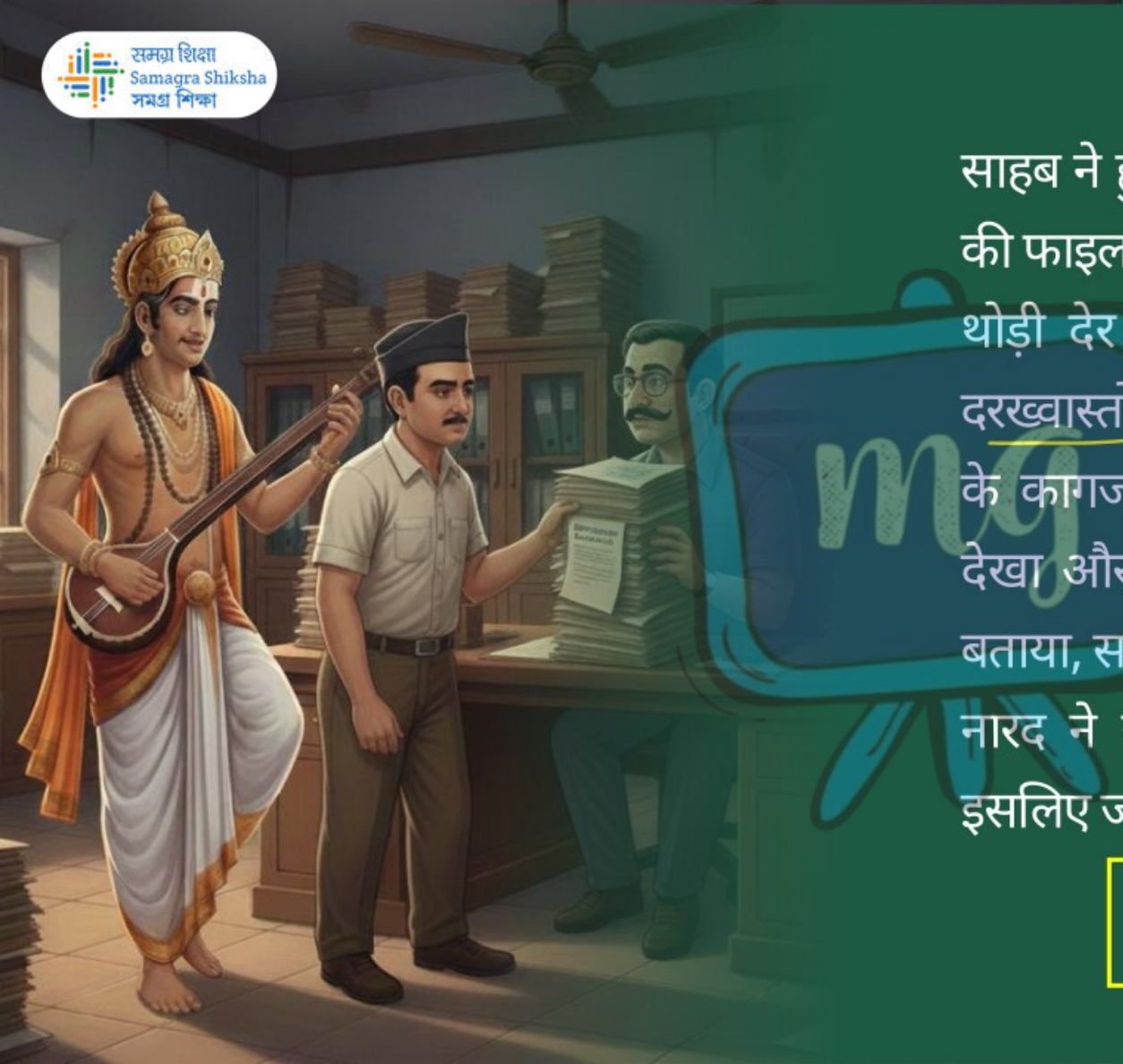

साहब ने हुक्म दिया- 'बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ !'

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ-डेढ़ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल पर का नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा- 'क्या नाम बताया, साधुजी, आपने?'

नारद ने समझा कि साहब कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए जोर से बोल - ' भोलाराम।'

ऊँचा सुनता : अलप कम शुना



सहसा फाइल में से आवाज आई- 'कौन पुकार रहा है मुझे? पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का ऑर्डर आ गया?'

साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गए। नारद भी चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गए। बोले- 'भोलाराम ! तुम क्या भोलाराम के जीव हो।'

'हाँ' आवाज आई।

नारद ने कहा- 'मैं नारद हूँ मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो स्वर्ग में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।'

आवाज आई- 'मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेंरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता !'



मूल्यांकन



1 | किसको चकमा दे कर भोलाराम का जीव भाग गया था ?

क नारद

ख चित्रगुप्त

ग ब्रह्मा

घ यमदूत

मूल्यांकन



2 हरिशंकर परसाई का जन्म कब हुआ था ?

क 1918 में।

ख 1922 में।

ग 1930 में।

घ 1925 में।

मूल्यांकन



3 | रिटायर का अर्थ-

क सेवानिवृत्त होना

ख कुछ कम सुनना

ग एक प्रकार का वाद्य-यंत्र

घ परिव्रता स्त्री

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca Foundation

पाठ सार

'भोलाराम का जीव' नामक कहानी में हरिशंकर परसाई ने पौराणिक युग के परिपेक्ष्य में आधुनिक समाज व्यवस्था में फैले भ्रष्टाचार को मार्मिकता के साथ पेश किया है। यह भ्रष्टाचार लगभग हर सरकारी विभाग में व्याप्त है तथा इससे समाज का हर वर्ग प्रभावित है। पाँच साल पहले सेवानिवृत्त भोलाराम की परेशानी में आम जनता की परेशानी छिपी हुई है। पाँच वर्षों तक पेंशन के लिए कार्यालय का चक्कर लगानेवाले भोलाराम के परिवार की आर्थिक दयनीयता पाठकों को सोचने पर विवश कर देती है। कहानी के अंत में नारद के सामने फाइल के पन्नों से भोलाराम की आत्मा की आवाज परिस्थिति की विडम्बना को व्यंग्यात्मक बना देती है।